जलवायु परिवर्तन - प्लान्टेशन की भूमिका

पुराने जंगलों को काटकर नए प्लांटेशन लगाना क्या सही रणनीति है? जलवायु परिवर्तन को रोकने में क्या प्लांटेशन कारगर हो सकते हैं?

क्यो तो जलवायु परिवर्तन संधि का शोर तो काफी है मगर लगता है कि यह एक वैज्ञानिक खामी से ग्रस्त है। 1997 में पारित क्योतो संधि का मूल मकसद ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाना है ताकि धरती का तापमान बढ़ने से रोका जा सके। इस संधि के तहत प्रत्येक देश के लिए लक्ष्य स्थापित किए गए हैं कि फलां वर्ष तक वह अपने कार्बन डाई उत्सर्जन में इतनी कमी कर देगा। इसमें एक व्यवस्था और है जो शायद समस्यामूलक साबित होगी। कोई देश चाहे तो अपना उत्सर्जन कम करने की बजाय ऐसा कोई इंतज़ाम कर सकता है जिससे वातावरण में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा कम होती है। जैसे वृक्षारोपण यानी प्लान्टेशन करना। संधि को पारित करते समय सोचा गया था कि ये प्लान्टेशन्स काफी कार्बन डाई ऑक्साइड सोख लेंगे - पेड़ हवा से कार्बन डाई ऑक्साइड सोखकर प्रकाश संश्लेषण के ज़रिए मण्ड बनाते ही हैं। मगर ताज़ा अध्ययनों से लगने लगा है कि शायद ऐसा न हो।

इटली के ट्यूशिया विश्वविद्यालय के रिकार्डो वेलेन्टिनी इस अध्ययन के निष्कर्ष शीघ्र ही प्रकाशित करने जा रहे हैं। यह अध्ययन दरअसल पूरे यूरोप में किया गया है - इसे कार्बोयूरोप का नाम दिया गया था।

पूरी समस्या की जड़ मिट्टी है। बताते हैं कि जंगलों की मिट्टी और उस मिट्टी में मौजूद कार्बनिक पदार्थों में कार्बन की मात्रा उस जंगल के पेड़ों में कार्बन की मात्रा से 3-4 गुना ज़्यादा होती है। कार्बोयूरोप के तहत हुए शोध से पता चलता है कि जब इस ज़मीन को प्लान्टेशन के लिए साफ किया जाता है तो मिट्टी में मौजूद उपरोक्त कार्बनिक पदार्थ सड़ने लगता है। इसकी वजह से कार्बन डाई ऑक्साइड वातावरण में पहुंचने लगती है। इस ज़मीन पर लगाए गए पौधे इतनी कार्बन डाई ऑक्साइड नहीं सोखते क्योंकि उनकी वृद्धि दर इतनी तेज़ नहीं होती। कम से कम दस सालों तक तो यह स्थिति रहती है कि मिट्टी से निकलती कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा पेड़ों द्वारा सोखी जा रही कार्बन डाई ऑक्साइड से ज़्यादा होती है। यानी प्लान्टेशन लगाने के दस साल बाद

तक तो इनमें से कार्बन डाई ऑक्साइड वातावरण में पहुंचती ही रहेगी।

यूरोप में कार्बन डाई ऑक्साइड उत्सर्जन की मात्रा को नापने के लिए लगे उपकरणों के आंकड़ों से पता चला है कि यूरोप के जंगल प्रतिवर्ष करीब 40 करोड़ टन कार्बन डाई ऑक्साइड सोखते हैं। यह वहां के कुल उत्सर्जन का 30 प्रतिशत है। पहले वैज्ञानिकों का मानना था कि पुराने जंगल तो अब वृद्धि करते नहीं हैं। इसलिए वे जितनी कार्बन डाई ऑक्साइड सोखते होंगे, उतनी ही छोड़ते होंगे। मगर रिकार्डो वेलेन्टिनी का मत है कि पुराने जंगल इस मामले में प्लान्टेशन से तो बेहतर ही हैं। यानी पुराने जंगलों को बचाना ही बेहतर रणनीति होगी, न कि उनको साफ करके नए प्लान्टेशन लगाना। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***